Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-10, Continuous Issue-16, November - December 2022

४. कविश्री हर्षदेव माधव की कविता में युगबोध

आधुनिक संस्कृत वाङ्मय की विविध शाखा-प्रशाखाओं में निष्णात कविश्री हर्षदेव माधव गुजरात की रत्नगर्भा वसुन्धरा के ही एक अनुपम रत्न हैं । आधुनिक संस्कृत कवियों में सर्वाधिक प्रयोगशील एवं अपारम्परिक कवि के रूप में अपना नाम दर्ज करानेवाले हर्षदेव माधव आधुनिक युगबोध के प्रतिनिधि कवि हैं । हर्षदेव के हस्ताक्षर सरस्वती के ही वरद हस्ताक्षर है । उन्होंने अपनी अविरत साहित्य साधना से संस्कृत जगत को तद्दन नवीन शैली व स्वरूपों का उपहार दिया है । प्रत्येक महान कलाकार जीवन के प्रत्येक क्षण को जीता है और उस अनुभूति को कला के आवरण में सँवारकर अभिव्यक्ति देता है । लेखक के विचार एवं भावनाएं उसके जीवन की ही प्रतिच्छाया होती है । एक साहित्यकार अपने युगविशेष से हट कर जी ही नही सकता । यही कारण है कि उनके साहित्य में भी उसके युग विशेष में प्रचलित विभिन्न जीवन-मूल्यों का प्रतिफलन स्वभावत: आया करता है । साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य की यही दर्पणधर्मिता किसी लेखक के कृतिगत युग-चित्रण का मूल्यांकन हुआ करती है ।

युगबोध का अर्थ :

युगबोध का सृजन प्रक्रिया से सीधा संबंध माना गया है । कलात्मक और साहित्यिक रचनाएं युगबोध से निर्मित होती है, तथा उसका प्रकटन भी करती है । विशेष रूप से युगबोध को किसी रचना की शाश्वतता और समकालीनता को जोड़नेवाली कड़ी माना जाता है । युगबोध में धर्म, राजनीति और समाज की महत्वपूर्ण घटनाओं के कारण कभी कभी युगविशेष का आविर्भाव या प्रवर्तन देखा जाता है । यथा- रामायण युग, महाभारत युग इत्यादि । जो युग व्यक्ति सापेक्ष होता है, वह किसी महामना व्यक्ति के जीवनचरित्र के गौरव के कारण उसी के नाम पर जनप्रिय हो जाया करता है । यथा- जैन युग, बौद्ध युग, गांधी युग, नेहरु युग इत्यादि । वस्तुत: अपने युग की स्थितिओं, सम्भावनाओं तथा प्रेरणाओं का बोध ही वास्तव में युगबोध कहा जा सकता है । इसके अन्तर्गत युगविशेष की आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, वैचारिक, दार्शनिक आदि सभी की स्थितिओं, संभावनाओं, आस्थाओं आदि का समाहार हो जाता हैं ।

युगबोध वेसे तो कोई वाद नहि है, किन्तु साहित्यकार जो युग में जीता है उसका ही प्रतिबिंब उनकी कविता में प्रकट होता है । ‘ मृगया ’ काव्यसंग्रह की अनेक कविताएँ युगबोध से व्याप्त हैं । कवि ने ‘ मृगया ’ का प्रतीक प्रयोजकर वर्तमान युग के मानव की मनोदशा का तादृश वर्णन किया है । मृग में व्याप्त भय को कवि ने सुंदर तरीके से व्यक्त किया है- ‘ अधुनाऽहम न जीवितं जीवामि, किन्तु भयं जीवामि ।’[१] भय से जीना व केवल लघुता से दैन्यता से जीना कवि को पसंद नही हैं । इसलिए कवि ने कहा है कि- ‘ कोऽपि न मृगत्वाय मृत्युं ददातु ।’[२]

वर्तमान समय में मानव के मन के जो अनिवार्य तत्व है- निर्दोषता, दया, प्रेम आदि का ह्रास हो गया है । मानवीय संवेदन ह्रास की इस प्रक्रिया को कवि ने ‘ मृगया ’ के प्रतीक से समजाया है ।

कवि ने अपने वर्तमान को खूब वास्तविक तरीके से ‘ मृगया ’ के प्रतीक से आलिखित किया है । चतुर्थ काव्य ‘ रावण राज्यम् ’ में एक दृश्य कल्पन वाचक की सृष्टि में उत्पन्न होता है कि रावण राज्य में एक बार ही नारी का अपहरण होता है, लेकिन वर्तमान समय में बार बार होता है ।[३] ‘ हेमन्त ’ काव्य में कवि पानखर के माध्यम से मानवजीवन की रिक्तता व निराशा का सूचन करते है । हमेशा बचाने वाले ईश्वर के प्रति अश्रद्धा व्यक्त करते है ।[४] मानचित्र के माध्यम से कवि वर्तमान भारत देश में प्रवर्तित सांप्रदायिक सद्भाव का अभाव, नीतिरहित परीक्षा व्यवस्था, भ्रष्टाचार, नेताओं के वचन पालन का अभाव व भ्रष्ट व्यवस्थातंत्र प्रति अंगुलिनिर्देश करते है । कवि का मानना है कि देश की इस अवस्था के लिए हम ही जिम्मेदार हैं ।[५]

कवि का चिंतन है कि यांत्रिक युग ने मानव को अशांति व असलामती दी है । इसलिए मनुष्य ज्यादा से ज्यादा परेशान हो रहा है । विश्वयुद्धोत्तर घटनाओं ने मानवीय संवेदनाओं का ज्यादा से ज्यादा ह्रास किया है । ऐसी ही कोई घटना के कवि साक्षी बने जैसे- ‘ तत: पश्चात् मम हृदयेऽपि विवराणी संजातानि ।’[६] वैश्विक घटनाएं कवि चेतना में जो स्पंदन जगाती हैं, उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति अनेक रचनाओं में देखी जा सकती है । जीवन की छलना मनुष्य को कैसे छलती है और आडम्बर का खोखलापन उसे विषाद के सागर में छलांग लगाने को बाध्य करता है । इस प्रकार के हादसों से कवि का अन्तर्मन आहत है ।

हर्षदेव माधव ऐसे अपारम्परिक कवि है, जो पाश्चात्य जीवन एवं समाज से संदर्भ लेकर कविता गढ़ते हैं, भले ही वह बात जीवन का कड़वा सच क्यों न हो । कवि ने ' चींटी ' के रूप में प्रजा का विचार रखके शासकों के हाथ से परेशान होती प्रजा के चित्रण में वास्तविकता का परिचय दिया है- ' राज्यकार्यसकतानां पादा: लोहपादत्राणायुक्ता: सन्ति । पिपीलिकानां चित्कारं क: शृणोति ? शासकानां हस्ता निर्मला भवन्ति ।[७] स्पर्धात्मक कथन के द्वारा हिंसा के हताशन को कवि इस तरह प्रकट करते है- ' बिडालो मूषकं हन्ति । सिहों मृगं घातयति । नकुल: सर्पं अश्नाति । ते सर्वे प्राणिन: सन्ति । मानवो मानवं घातयति । मानवतां हन्ति ।[८] ऐसी सांप्रत संवेदना वैश्विक बनती है तब कवि इस तरह से उद्घाटित करते है- ' वेदना 'एगेमेम्नोन' नाम्नो ग्रीकनाटकस्य वृन्दगान मस्ति ।[९] राधावल्लभ त्रिपाठी ने लिखा है कि- आधुनिक जीवन के खोखलेपन की समज ने हर्षदेव की कविता में एक जकजोर ने वाली प्रश्नकुलता का आधान किया है ।[१०]

' निष्क्रांता सर्वे ' काव्यसंग्रह के ' युद्ध ' नामक काव्य में कवि ने शांति के घातक ऐसे युद्ध की भयानकता व करुणता का निरूपण किया हैं । कवि के मतानुसार युद्ध मृत्यु के वस्त्रो पहनकर निराशा के रण में आते है, अर्थात् युद्ध मृत्यु का संदेशा देता है । शांति भी युद्धं के कारण घायल होती है- ' युद्धं मृत्यो वस्त्राणि परिधाय समुपैति नैराश्यरणे राजग्रस्ता शांति: ।'[११] ' हत्या ' नामक काव्य में कवि आधुनिक समय में हो रही खूनामरकी व हत्या विषयक चिन्तन प्रस्तुत करते है । हत्या के द्वारा अहिंसा की हत्या हुई है । इस द्रष्टांत के द्वारा कवि गांधीजी की अहिंसा विचारधारा को प्रस्तुत करते है ऐसा लगता है । मानवता को हरित करने वाला क्या मनुष्य हो सकता है ? ऐसे प्रश्न करते कवि के मनमें हत्या के विरोध के द्वारा विश्वशांति की झंखना है- ' हत्याया: विरोधं कर्तु नागपुर बद्धमस्ति, दिल्हीनगरं बद्धमस्ति ।'[१२] ' संचारबन्धे विद्रोह ' नामक काव्य में कवि अहमदाबाद के मानवों की अशांति का अनुभव करके शांति की अवदशा का वर्णन करते है । इसके द्वारा कवि कहते है कि लोग राजद्रोह करने में अपनी शांति खो चूके है । मनुष्यों में एकता नहीं है- ' दह्यंते शांत्यक्षराणि, कृष्यन्ते त्वेकताया वस्त्राणि, हीयते मानवताया: सर्वेस्वम् ।'[१३] बाबरी ध्वंस के बाद ' अयोध्या ' शीर्षक अन्तर्गत कवि ने लिखा है कि अयोध्या में मानवों नहीं रहते मात्र दु:ख के टुकड़े रहते है । वहाँ के घरों में आँसुओं के दीप के साथ मात्र व्यथा ही श्वास ले रही है- ' अधुना अयोध्यायां मनुष्या न वसन्ति, वसन्त्यत्र विषादखंडा: महालयेषु अश्रुदीपा: प्रज्वलन्ति ।'[१४]खंडित अयोध्या की व्यथा को प्रस्तुत करते हुए कवि कहते है कि- अयोध्या सीता होती तो पृथ्वी में समाती- ' अयोध्या नास्ति सीता अन्यथा सा पृथ्व्यां समाधिं गृह्णीयात् ।'[१५] यहां कवि आतंकवादी व धर्मांध लोगों के प्रति कटाक्ष करते है । इस तरह सांप्रत घटनाएं कवि के युगबोध का निर्देश करती है ।

कवि पूरे भारतवर्ष के कोई प्रदेश पर अपनी रचना प्रस्तुत करते है तब सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि दृष्टिकोण रहा है । चेरापुंजी सर्वाधिक बारिश के लिए जाना जाता है । इस घटना स्थल का कवि वर्णन करते है- ' चेरापुंजीकंठे सदैव मेघस्य घनाश्लेष: । तस्या रोमाञ्चो हरिततृणेषु कंपश्चीड़वृक्षेषु ।'[१६] भगवान शिव और विष्णु का निवास महाबलीपुरम मंदिर हवा और समुद्र के झोकों से परिपूर्ण है इस विषय में कवि ने अपना दृष्टिकोण रखा है- महाबलीपुरं देवालय पंचकवत् ममापि प्राणपञ्चकं निमज्जितमेव समुद्रे निरवधिजलराशौ....।[१७] ' जोगजलप्रपात ' कविता में कवि ने पृथ्वी की सन्दरता का अद्भुत वर्णन किया है- ' रक्तकार्पासवृक्षवेष्ठितं जलस्वप्नं नि:सृतं जोगजलप्रपाते ।'[१८] ' कालीघाटे ' कविता में कवि ने सती के शरीर के अंग प्रत्यंग जहां गिरे वहाँ शक्तिपीठ के स्थान का वर्णन किया है- ' कालीघाटे सुवर्णालंकारभूषिताया देव्या: मूर्त्या: वामपदचतुरङ्गुल्य: कुत्र अन्विष्यामि ?[१९]

मंजुलता शर्मा कवि हर्षदेव की कविता के युगबोध के विषय में अभिप्राय देते है कि- ' आइये यदि आपको मसूरी, हरिद्वार, उदयपुर, बंगाल, पशुपतिनाथ, सोमनाथ, सिंहलद्वीप, शिलोंग, लद्दाख, मिस्त्रदेश, यूरोपिया, नागार्जुन, कोंडा, आस्ट्रेलिया आदि अनेक स्थानों को देखने की उत्कंठा है तो कहीं जाने की जरूरत नहीं । कवि माधव की कविताओं के गलियारों में चल जाइये, सम्पूर्ण विश्व घूम लेंगे आप ।'[२०] रमाकान्त शुक्ला कृत बहु प्रचलित काव्यरचना ' भाति मे भारतम् ' के प्रति-काव्यम् के रूप में प्रचलित, कवि हर्षदेव माधव कृत ' भाति ते भारतम् ' काव्य प्रचंड युगबोध से व्याप्त है । उन्होंने अपनी इस रचना में भारत को वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत किया है, जैसे- जन्मभूमेर्विवादे स्थितो राघवों , नैवकारागृहान्मुच्यते माधव: । गोवधात् दु:खितं यत्र वृंदावनं, शड्करोऽस्ति स्मशाने सुखी भारतम् ।[२१] कवि माधव ने अपनी इस नवीन रचना में अनेकों पहलूओं को संजोया है । वे अद्यापि रामराज्य जैसा भारत चाहते तो हैं परंतु उसकी छाया भी उन्हें कहीं दिखाई नहीं देती । उन्हें तो समस्त दिशाओं में प्रताड़ित मानवता का क्रंदन सुनाई देता है- ' काश्मीरे क्रंदनं दक्षिणे नकसला: नाग्विद्रोहीर्नाग देशोऽर्दित: । जातिवादो विहारेषु वृद्धिगत: विक्लवं विह्वलं विस्मृतं भारतम् ।[२२] कवि का मानना है कि हम अपने आदर्शों से गिरकर पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण कर रहे हैं- ' गान्धिनाम्ना कृतं दांभिकं भारतम् ।'[२३] कवि का कहना है क्या यही है भारत और भारतीयता ?

मंजुलता शर्मा का कथन है कि- ' स्त्रियों के प्रति माधव का हृदय कुछ अधिक ही भावुक है । ' केनापि रामेण त्यक्ता / केनापि नलेन निर्वासिता/ केनापि दुष्यन्तेन वंचिता / केनापि हरिश्चन्द्रेन विसृष्टा । शर्मा का कहना है कि कवि स्वयं नारी के अन्तद्वंद्व के साक्षी है । प्राचीनकाल से लेकर आजतक नारी का बार बार तिरस्कृत होना माधव को स्वीकार नहीं है ।[२४]

अत: आधुनिक संस्कृत रचना का एक प्रतिमान तो यही चाहिए कि रचनाकार ने अपने समय में जीवन और संसार को उसकी प्रामाणिकता में किस सीमा तक पहुंचाया है । यह सत्य है कि ससामायिक संस्कृत साहित्य की कम रचनाएं ही इस प्रतिमान की कसोटी पर कसने लायक होती है । कवि हर्षदेव जीवन एवं समाज से द्रष्टांत लेकर कविता का सृजन करते है भले ही वह जीवन का कड़वा सच क्यों न हो । कविश्री हर्षदेव माधव युग द्रष्टा ही नहीं अपितु युगस्त्रष्टा भी हैं । जबभी युग बदलता है युगप्रवर्तक को संघर्ष करना ही पड़ता है । नींव का पत्थर किसी को तो बनाना ही होता है । अत: वह अजेय खड़े होकर प्रत्येक प्रहार को अपनी लेखनी से त्रस्त करने पर दृढीभूत है । अत: आर्वाचीन संस्कृत को वैश्विक फ़लक पर स्थापित करने वाले इस कवि के लिए आचर्यत्व गौढ़ हो गया है । गुजरात के कवि हर्षदेव माधव नाम है एक जुनून का, नये अनुसंधान का और एक प्रकृष्ट साधक का ।

संदर्भ :

1. हर्षदेव माधव, व्रणो रूढग्रंथि, काव्यसंग्रह-३ मृगया, प्रका. पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, प्रथम आवृति -२०१०, कविता- १, पृ. १५६
2. वही.
3. वही, कविता -५, पृ. १६०
4. नहि ईश्वरस्य हस्ते मम श्रद्धा नास्ति । मृगया- कविता- ८, पृ.१६३
5. वही, मृगया- कविता-१०, पृ.१६६
6. हर्षदेव माधव, व्रणो रूढग्रंथि- काव्यसंग्रह-३ मृगया, प्रका. पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, प्रथम आवृति -२०१०, कविता-१७, पृ.१७३
7. हर्षदेव माधव, निष्क्रांता सर्वे, प्रका. संस्कृत साहित्य अकादमी गांधीनगर, प्रथम आवृति-१९९७, पृ.३५
8. वही, पृ.१०२
9. वही, पृ.१३३
10. श्रुति हर्षदेव, आधुनिक संस्कृत में अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति की कविता, प्रका. श्रीवाणी अकादमी चांदखेड़ा, प्रथम आवृत्ति- २००१, पृ.३
11. हर्षदेव माधव, निष्क्रांता सर्वे, प्रका. संस्कृत साहित्य अकादमी गांधीनगर, प्रथम आवृति- १९९७, पृ. १६
12. वही, पृ.१०२
13. वही, पृ.१०३
14. वही, पृ.७०
15. वही.
16. हर्षदेव माधव, रथ्यासु जंबूवर्णानां शिराणाम्, प्रका. संस्कृत सेवा समिति अहमदाबाद, प्रथम आवृति - १९८५, कविता- ८, पृ.७
17. वही, कविता -१४ पृ.१३
18. वही, कविता-१६ पृ.१४
19. वही, कविता-१७ पृ.१
20. आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएं- डॉ.हर्षदेव माधव अभिनन्दन ग्रंथ, सम्पा. अशोकपटेल.. आदि प्रका. पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, प्रथम आवृत्ति-२०१५, प्रलेख- ८, पृ.५४
21. हर्षदेव माधव, भाति ते भारतम्, प्रका. सबिता दाश, ओरिस्सा, प्रथम आवृति -२००७, पृ. ८
22. वही. पृ.२९
23. वही. पृ.६०

24. आधुनिक संस्कृत की नई दिशाएं- डॉ.हर्षदेव माधव अभिनन्दन ग्रंथ,सम्पा. अशोकपटेल...आदि, प्रका. पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, प्रथम आवृति -२०१५, प्रलेख -८ पृ. ६२

डॉ. भावना जी सोनी
आसीस्टंट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
आदिवासी आर्ट्स & कॉमर्स कॉलेज, भिलोडा
अरवल्ली